❍ 09 / 02 / 21 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗अव्यभिचारी होकर रहे ?∗

➢➢ ∗एक बाप से प्रीत बुधी होकर रहे ?∗

➢➢ ∗सवा स्थिति द्वारा हर परिस्थिति को पार किया ?∗

➢➢ ∗सदा खुश रहे और सबको ख़ुशी बांटी ?∗

────────────────────────

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

〰✧ आजकल के जमाने में डाक्टर्स कहते हैं दवाई छोड़ो, एक्सरसाइज करो, ∗तो बापदादा भी कहते हैं कि युद्ध करना छोड़ो, मेहनत करना छोड़ो, सारे दिन में 5-5 मिनट मन की एक्सरसाइज करो। वन मिनट में निराकारी, वन मिनट में आकारी, वन मिनट में सब तरह के सेवाधारी, यह मन की एक्सरसाइज 5 मिनट की सारे दिन में भिन्न-भिन्न टाइम करो तो सदा तन्दरूस्त रहेंगे, मेहनत से बच जायेंगे।∗

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं निर्विघ्न स्थिति द्वारा हर कदम में तीव्रगति से आगे बढ़ने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा निर्विघ्न, सदा हर कदम में आगे बढ़ने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो ना! किसी प्रकार का विघ्न रोकता तो नहीं है? *जो निर्विघ्न होगा उसका पुरुषार्थ भी सदा तेज होगा क्योंकि उसकी स्पीड तेज होगी। निर्विघ्न अर्थात् तीव्रगति की रफतार।* विघ्न आये और फिर मिटाओ इसमें भी समय जाता है। अगर कोई गाड़ी को बार-बार स्लो और ते]ज करे तो क्या होगा? ठीक नहीं चलेगी ना। विघ्न आवे ही नहीं उसका साधन क्या है?

〰✧ *सदा मास्टर सर्वशक्तिवान की स्मृति में रहो। सदा की स्मृति शक्तिशाली बना देगी। शक्तिशाली के सामने कोई भी माया का विघ्न आ नहीं सकता। तो अखण्ड स्मृति रहे। खण्डन न हो।* खण्डित मूर्ति की पूजा भी नहीं होती है। विघ्न आया फिर मिटाया तो अखण्ड अटल तो नहीं कहेंगे। इसलिए 'सदा' शब्द पर और अटेन्शन। सदा याद में रहने वाले सदा निर्विघ्न होंगे।

〰✧ संगमयुग विघ्नों को विदाई देने का युग है। जिसको आधा कल्प के लिए विदाई दे चुके उसको फिर आने न दो। सदा याद रखो कि हम विजयी रत्न हैं। विजय का नगाडा बजता रहे। विजय की शहनाईयाँ बजती रहती हैं. ऐसे याद

द्वारा बाप से कनेक्शन जोड़ा और सदा यह शहनाईयाँ बजती रहें। *जितना-जितना बाप के प्यार में, बाप के गुण गाते रहेंगे तो मेहनत से छूट जायेंगे। सदा स्नेही, सदा सहजयोगी बन जाते हैं।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *बापदादा ने जो रूहानी एक्सरसाइज दी है, वह सारे दिन में कितने बार करते हो?* और कितने समय में करते हो? निराकारी और फरिश्ता।

〰✧ बाप और दादा, अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फरिश्ता स्वरूप। दोनों में देह-भान नहीं है। तो *देहभान से परे होना है तो यह रूहानी एक्सरसाइज कर्म करते भी अपनी डयुटी बजाते हुए भी एक सेकण्ड में अभ्यास कर सकते हो।*

〰✧ *यह एक नेचुरल अभ्यास हो जाए - अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फरिश्ता।* अच्छा (बापदादा ने ड्रिल कराई)

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *सिर्फ अपनी विस्मृति इन सब बातों को उत्पन्न करती है। चाहे पिछले संस्कार, चाहे पिछले कर्म-बन्धन, चाहे वर्तमान की भूले - जो भी कुछ होता है, उनका मूल कारण अपनी विस्मृति है।* अपनी विस्मृति के कारण यह सभी व्यर्थ बातें सहज को मुश्किल बना देती हैं। स्मृति रहने से क्या होगा? जो लक्ष्य रखकर के आये हो स्मृति सम्पूर्ण विस्मृति असम्पूर्ण। *विस्मृति है तो बहुत ही विघ्न हैं और स्मृति है तो सहज और सम्पूर्णता।* अपनी बुद्धि को कण्ट्रोल करने के लिए कई बातों को हल्का करना पड़ता हैं। सभी से हल्की क्या चीज़ होती है? आत्मा (बिन्दी)। तो जब अपने को कण्ट्रोल करने लिए फुलस्टाप करना होता है। तो आप भी बिन्दी लगा दो। जो बीत चुका उसको बिल्कुल भूल जाओ।

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप ही सर्व का सदगति दाता है"*

➳ _ ➳ सागर किनारे बैठी मैं आत्मा बाबा को स्नेह से याद कर रही हूँ... सागर की कल कल करती लहरों को देखते-देखते, प्रकृति के सामीप्य में... सहज ही मन मीठे बाबा की यादों में मगन हो रहा है... मैं अनुभव करती हूँ बापदादा ने पीछे से आकर मेरे कंधे पर अपना मजबूत हाथ रख दिया है... पीछे मुड़ती हूँ तो अपने समीप अपने मीठे बाबा को देखती हूँ... बाबा के चेहरे का प्रकाश चारों और दिव्यता फैला रहा है... उनकी हंसी मुझे असीम आनंद से भर रही है... बाबा की मंद मंद मुस्कान, दमकते चेहरे को देखकर यह महसूस हो रहा है कि... *आज बाबा से बहुत सुंदर रुहरुहान होने वाली है... मेरे मन में भी उत्सुकता हो रही है कि आज बाबा मुझे क्या कहने वाले हैं...*

❊ *अपनी मीठी मुस्कान से आत्मा में आनंद रस घोलते हुए बाबा कहते हैं:-* "मेरे मीठे लाडले बच्चे... तुम आधाकल्प से अपने को भूले हुए माया के थपेड़े खाते भटकते आए हो... *अब मैं तुम्हें सच्चा रास्ता दिखाने आया हूँ... यह तुम्हारा अंतिम जन्म है...* इसलिए तुम एक मुझ में ही निश्चय रखो... परमत, मनमत का त्याग कर एक मेरी ही श्रीमत पर चलो... जो सभी तरह से सुख देने वाली है..."

➳ _ ➳ *बाबा के सच्चे स्नेह में लीन होती मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे दिलाराम बाबा... आपने आकर मुझे सच्चा सुख दिया है... मुझे जन्म जन्म की भटकन से बचा लिया है... अब मैं सिर्फ आपको ही अपनी यादों में समाया हुआ पाती हूँ... आपकी बताई शिक्षाओं पर, आपके बताये मार्ग पर ही चल रही हूँ... *मैं कितनी भाग्यवान आत्मा हूँ... स्वयं भगवान सतगुरु बनकर आ गए हैं... मुझे मुक्ति और जीवनमुक्ति का मार्ग दिखा रहे हैं..."*

❊ *मुझ आत्मा को अपने दिलतख्त पर बिठाके बेहद प्यार बरसाते हुए बाबा कहते हैं:-* "मीठे मीठे सपूत बच्चे... *मैं तुम्हें कलियुगी दलदल से निकालकर पहले मुक्तिधाम ले जाता हूँ... फिर वहाँ से सतयुगी सुखों की दुनिया में ले जाता हूँ...* इसके लिए मैं जो मत तुम्हें देता हूँ... वह सबसे न्यारी है... कोई भी देहधारी गरू. सन्त महात्मा यह मत नहीं दे सकते... इसलिए ही गाया जाता

है... तुम्हारी गत मत तुम ही जानो... तुम मेरी इस श्रेष्ठ मत को अपने जीवन में धारण करो..."

➳ _ ➳ *बाबा की गोद में बैठ पुलकित होती हुई मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे मन के मीत मीठे बाबा... आपकी श्रीमत मुझ आत्मा के लिए हर प्रकार से कल्याणकारी है... मनमत, परमत पर चल के तो आधा कल्प दुःख पाया, भटकते रहे... अब मैं आपकी शिक्षाएं ही धारण करूँगी... *आपकी ही मत पर चलके भविष्य के लिए अपना श्रेष्ठ भाग्य जमा करूँगी..."*

❇ *मुझे सभी चिंताओं से मुक्त कर बेगमपुर का बादशाह बनाते हुए बाबा कहते हैं:-* "मेरे लाडले सिकीलधे बच्चे... *गति सदगति करने की मत मैं ही आकर बताता हूँ... मनुष्य गुरु कोई भी सदगति नहीं कर सकते...* वे कोई भी कह नहीं सकते कि... मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा... सर्व का सदगति दाता, लिबरेटर एक मैं ही हूँ... तुम कदम कदम पर मुझ से राय लो... एक मेरी शिक्षाओं को ही अमल में लाओ..."

➳ _ ➳ *बाबा के हाथ और साथ से संगम के हर पल में मौज मनाती मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे दिल के सहारे प्यारे बाबा... मैंने एक दिलाराम को ही अपने दिल में बसा लिया है... आपकी शिक्षाएं ही मेरे जीवन का श्रृंगार कर रही हैं... आपकी बाहों में ही मैंने सच्चा सुख पाया है... *अब मैं सदा आपकी श्रीमत पर ही चल रही हूँ... आप मुझे सर्व सुखों की जागीर देने आए हैं... उसे पाने के लिए मैं स्वयं को हर प्रकार से योग्य बनाती जा रही हूँ..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- एक बाप से ही सुनना है*"

➳ ➳ "मेरे तो शिवबाबा एक. दसरा ना कोई" इस गीत को गनगनाते हुए

मैं अपने घर के आंगन में टहल रही हूँ और सोच रही हूँ कि जब से मुझे बाबा मिले हैं मेरा जीवन कितना सुंदर हो गया है। जिस जीवन मे दुःख, निराशा के सिवाय कुछ नही था वो जीवन मेरे भगवान बाबा ने आ कर कितना सुखदाई बना दिया है। *बाबा के साथ ने जीवन को ऐसा हरा भरा कर दिया है जैसे बारिश की बूंदे मुरझाये हुए पेड़ पौधों को हरा भरा कर देती हैं*। मेरे दिलाराम बाबा का प्यार ही तो मेरे इस जीवन की बहार है और अब मुझे अपने इस जीवन को बहार को पूरा संगमयुग ऐसे ही बरकरार रखना है इसलिए अपने दिलाराम शिव बाबा के फ़रमान पर चलना और केवल उनसे ही अब मुझे सुनना है।

➳ _ ➳ स्वयं से बातें करते, अपने शिव पिता परमात्मा के प्यार के सुखद एहसास में मैं खो जाती हूँ और उनके प्यार का वो सुखद एहसास मुझे अपनी ओर खींचने लगता है। *ऐसा अनुभव होता है जैसे मैं एक पतंग हूँ और मेरी डोर मेरे शिव पिता के हाथ में है जो मुझे धीरे धीरे ऊपर खींच रहे हैं*। उनके प्रेम की डोर में बंधी मैं देह और देह की दुनिया को भूल ऊपर की और उड़ रही हूँ। नीले गगन में उन्मुक्त हो कर उड़ने का मैं आनन्द लेती हुई उस गगन को भी पार कर, उससे ऊपर सूक्ष्म लोक से भी परे मैं पहुंच जाती हूँ लाल प्रकाश से प्रकाशित निराकारी आत्माओं की दुनिया में जो मेरे शिव पिता परमात्मा का घर है। शान्ति की इस दुनिया मे पहुंचते ही गहन शांति की अनुभूति में मैं खो जाती हूँ।

➳ _ ➳ यह गहन शांति का अनुभव मुझे हर संकल्प, विकल्प से मुक्त कर रहा है। मुझे केवल मेरा चमकता हुआ ज्योति बिंदु स्वरूप और अपने शिव पिता का अनन्त प्रकाशमय महाज्योति स्वरूप दिखाई दे रहा है। *महाज्योति शिव बाबा से आ रही अनन्त शक्तियों की किरणें मुझ ज्योति बिंदु आत्मा पर पड़ रही है और मुझमे अनन्त शक्ति भर रही है*। मेरे शिव पिता परमात्मा से आ रही सतरंगी किरणे मुझ आत्मा में निहित सातों गुणों को विकसित कर रही हैं। देह अभिमान में आ कर, अपने सतोगुणी स्वरूप को भूल चुकी मैं आत्मा अपने एक - एक गुण को पुनः प्राप्त कर फिर से अपने सतोगुणी स्वरूप में स्थित होती जा रही हूँ। *हर गुण, हर शक्ति से मैं स्वयं को सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ*।

➳ _ ➳ बाबा से आ रही सर्वगुणों, सर्वशक्तियों की शक्तिशाली किरणों का प्रवाह निरन्तर बढ़ता जा रहा है। ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे बाबा अपने इन सर्वगुणों और सर्वशक्तियों को मुझ आत्मा में प्रवाहित कर मुझे आप समान बना रहे हैं। *इन शक्तिशाली किरणों की तपन से विकारों की कट जल कर भस्म हो रही है और मेरा स्वरूप अति उज्ज्वल बनता जा रहा हैं*। सातों गुणों और सर्वशक्तियों से भरपूर, अति उज्ज्वल, स्वरूप ले कर अब मैं आत्मा वापिस साकारी दुनिया मे लौट रही हूँ। साकारी तन में विराजमान हो कर भी अब मुझ आत्मा के गुण और शक्तियां सदा इमर्ज रूप में रहते हैं।

➳ _ ➳ "एक बाप के ही फरमान पर चलना और बाप से ही सुनना" इसे अपने जीवन का मंत्र बना कर अपने शिव पिता परमात्मा के स्नेह में मैं सदा समाई रहती हूँ। सिवाय शिव बाबा की मधुर वाणी के अब और किसी के बोल मेरे कानों को अच्छे नही लगते। *सिवाय श्रीमत के अब किसी की मत पर चलना मुझे ग्वारा नही*। सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ जोड़, अब मैं देह और देह की दुनिया से किनारा कर चुकी हूँ। चलते - फिरते, उठते - बैठते हर कर्म करते बाबा की छत्रछाया के नीचे मैं स्वयं को अनुभव करती हूँ। *कदम - कदम पर बाबा की श्रीमत ढाल बन कर मेरे साथ रहती है और मुझे माया के हर वार से सदा सेफ रखती है*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं स्व-स्थिति द्वारा हर परिस्थिति को पार करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर त्रिकालदर्शी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा खुश रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सबको सदैव खुशी बांटती हूँ ।*
✺ *मैं सच्ची सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ वैसे बापदादा ने देखा है कि सेवा से लगन अच्छी है। सेवा के लिए एवररेडी हैं, चाँस मिले तो प्यार से सेवा के लिए एवररेडी हैं। लेकिन अभी सेवा में एडीशन करो - *वाणी के साथ-साथ मनसा, अपनी आत्मा को विशेष कोई-न-कोई प्राप्ति के स्वरूप में स्थित कर वाणी से सेवा करो*। मानो भाषण कर रहे हो तो वाणी से तो भाषण अच्छा करते ही हो लेकिन उस समय अपने आत्मिक स्थिति में विशेष चाहे शक्ति की, चाहे शान्ति की, चाहे परमात्म-प्यार की, कोई-न-कोई विशेष अनुभूति की स्थिति में स्थित कर मनसा द्वारा आत्मिक स्थिति का प्रभाव वायुमण्डल में फैलाओ और वाणी से साथ-साथ सन्देश दो। *वाणी द्वारा सन्देश दो, मनसा आत्मिक स्थिति द्वारा अनुभूति कराओ*।

➳ ➳ *भाषण के समय आपके बोल आपके मस्तक से. नयनों से. सरत

से उस अनुभूति की सीरत दिखाई दे* कि आज भाषण तो सुना लेकिन परमात्म प्यार की बहुत अच्छी अनुभूति हो रही थी। *जैसे भाषण की रिजल्ट में कहते हैं बहुत अच्छा बोला, बहुत अच्छा, बहुत अच्छी बातें सुनाई, ऐसे ही आपके आत्म-स्वरूप की अनुभूति का भी वर्णन करें। मनुष्य आत्माओं को वायब्रेशन पहुँचे, वायुमण्डल बने। जब साइंस के साधन ठण्डा वातावरण कर सकते हैं, सबको महसूस होता है बहुत ठण्डाई अच्छी आ रही है। गर्म वायुमण्डल अनुभव करा सकते हैं। साइंस सर्दी में गर्मी का अनुभव करा सकती है, गर्मी में सर्दी का अनुभव करा सकती है, तो आपकी साइलेन्स क्या प्रेम स्वरूप, सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप वायुमण्डल अनुभव नहीं करा सकती*। यह रिसर्च करो। सिर्फ अच्छा-अच्छा किया लेकिन अच्छे बन जायें, तब समाप्ति के समय को समाप्त कर अपना राज्य लायेंगे।

✺ *ड्रिल :- "भाषण के साथ-साथ परमात्म प्यार की अनुभूति कराना "*

➳ _ ➳ प्राप्ति स्वरूप मैं आत्मा संगम की प्राप्तियों को साक्षी होकर देख रही हूँ... *समय, स्वाँस और संकल्पों के खजाने से मालामाल मैं आत्मा, मेरे पास सेवा के ये अनूठे से साधन...* मनसा वाचा और कर्मणा... मेरे लिए अखुट कमाई का साधन है...

➳ _ ➳ प्रेम स्वरूप मैं आत्मा, परमात्म प्यार में लीन देख रही हूँ स्वयं को भृकुटी के मध्य में... सुनहरे लाल प्रकाश से झिलमिलाती मैं मणि सम्पूर्ण देह को आलोकित कर रही हूँ... *मन में उठने वाले हर सकंल्प को पवित्रता की शक्ति से भरपूर करती मैं आत्मा, वाचा शक्ति को परमात्म प्रेम और गुणों के प्रकाश से भरपूर कर रही हूँ*... मेरी वाचा परमात्म प्यार और शक्तियों का स्वरूप प्रतीत हो रही है...

➳ _ ➳ *देह में विराजमान मैं आत्मा नयन, बोल, मस्तक और सम्पूर्ण सूरत से परमात्म सीरत की अनुभूति करा रही हूँ*... प्रभु प्रेम में मगन *मेरा बाबा मीठा बाबा* बोलती ये आँखें हर आत्मा को मेरे शान्त स्वरूप की अनुभूति करा रही है... मस्तक पर दमकती भाग्य रेखा मेरे उच्च भाग्य की झलक दिखा रही है... सरत में और मेरे हर कर्म में बापदादा की सीरत प्रत्यक्ष हो रही है...

➳ _ ➳ *मुझसे निकलते प्रेम पवित्रता शान्ति और शक्तियों के वायब्रैशन शक्तिशाली वातावरण का निर्माण कर रहे है... अंग प्रत्यंग अपनी अपनी मूक भाषा में भाषण करते प्रतीत हो रहे है... वाणी से परमात्म गुणों का वर्णन करती मैं उन्हीं के गुण स्वरूप बनती जा रही हूँ*... मैं मनसा वाचा और कर्मणा परमात्म प्रेम की गहरी अनुभूति कर आस- पास की सभी आत्माओं को उन अनुभूतियों से भरपूर कर रही हूँ...

➳ _ ➳ *प्रकाश का झरना बहाते शिव बिन्दु मेरे सिर के ठीक ऊपर*... मैं नहाती जा रही हूँ इस लाल रंग के गहरे प्रकाश में... मेरे रोम रोम को अथाह ऊर्जा से भरपूर कर रहा है, ये प्रकाश... असीम शक्तियों की मैं मालिक मास्टर सर्व शक्तिमान की सीट पर सेट होकर मनसा द्वारा आत्मिक शक्तियों का प्रकाश फैलाती हुई... दूर दूर तक वातावरण में फैलता परमात्म प्यार फैलता जा रहा है...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔